वास्तविक आनंद कहाँ है ?

आम लोगों का यह ख्याल है कि दुनियाँ के सामान के अंदर सुःख का माद्दा मौजूद है, इसलिए दुनियाँ के सामान हासिल होने पर इंसान को सुःख प्राप्त हो सकता है. इसीलिए तमाम दुनियाँ के लोग दुनियाँ के सामान इकठ्ठे करने की कोशिश में लगे रहते हैं. कोई रूपये-पैसे में सुःख समझता है. उसका ख्याल है कि रुपया जमा होने पर हमेशा-हमेशा के सुःख की प्राप्ति और दुःख से निवृति हो जाएगी. इसलिए रूपये पैदा करने और जमा करने की उम्र भर कोशिश करता रहता है. हज़ारों झूंठ बोलता है, सैकड़ों बेईमानियाँ करता है, दुश्मनी-दोस्ती पैदा करता है, खुशामदें करता फिरता है, लोगों के गले कटवाता है, तब कहीं जाकर रुपया जमा होता है .

लेकिन उसको सच्चा सुःख, जिसके लिए यह सब यत्न किये थे नसीब नहीं होता. अगर रूपये में सुःख होता तो तमाम रूपये वाले सुखी होते. नतीजा और तज़ुर्बा इसके खिलाफ़ है. ज़्यादातर रईस (धनी) लोग दुखी नज़र आते है . रूपये से सुःख तो मिल सकते है, जो रूपये के अभाव में दुःख रूप बन जाते हैं, परन्तु पूर्ण रूप से सुःख नहीं होता, बल्कि रुपया खुद उनके लिए एक जंजाल बन जाता है.

दूसरा व्यक्ति औलाद में सुःख तलाश करता है, शादी करता है, हज़ारों मिन्नतें मांगता है, और जतन पर जतन करता है. औलाद पैदा होती है, उसकी परवरिश बड़े लाढ़-चाव से करता है. उनकी तंदरुस्ती क़ायम रखने के लिए हरेक क़ुरबानी करता है, न दिन का ख्याल है न रात का, न धूप की चिंता है न बरसात की. डाक्टरों के चककर लगाया करता है. गंडे-ताबीज़ वालों की खुशामदें करता है. कभी गधे के नीचे की मिटटी की तलाश करता है, कभी मसान पर दूध चढाने जाता है. पाल-पोसकर बड़ा हो गया. अब पढ़ाई की फ़िक्र है, फिर नौकरी की और फिर शादी की. सारांश यह है कि इसी के पीछे उसकी तमाम उम्र नष्ट हो जाती है. समझता यह है कि एक बात के पूरा होने पर सुःख हासिल हो जायेगा, लेकिन एक बात के खत्म होते ही दूसरी बात शुरू हो जाती है और ख़ुशी का मुँह देखना नसीब नहीं होता. अगर लड़का नालायक निकल गया तो भी रंज, और यदि मर गया तो उम्र भर का रोना. लो औलाद भी एक जंजाल हो गयी.

तीसरा व्यक्ति एक मकान में सुःख तलाश करता है. इधर मकान बन कर तैयार हुआ उधर उसकी मरम्मत की फ़िक्र पड़ गयी. मकान एक मुसीबत का घर साबित हुआ. कोई खूबसूरत औरत में सुःख प्राप्त करता है, तो कोई विद्या प्राप्त करने में. लेकिन असली सुःख मिलना दरकिनार, दो चार घंटों के लिए भी सुःख नहीं मिलता. थोड़ी देर के लिए परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है. इसी को वह सुःख का नाम दे देता है.

हरेक चीज़ जिसमें वह सुःख तलाश करता है, उसके गले की हड्डी या फांसी साबित होती है. उम्र भर उसी में झूमता रहता है और आखिर में वही उसकी जान ले लेती है. उस रेशम के कीड़े की तरह जो अपने अंदर से तार निकलता है, आखिर में वह तार उसको चारों तरफ से घेर लेते है, हवा तक को रोक देते हैं, और वह कीड़ा दम घुट कर मर जाता है.

इन बातों को देखने से मालूम होता है कि सुःख दुनियाँ की चीज़ों में नहीं है वरना धनवान, पुत्रवान, खूबसूरत पत्नी वाले, बढ़िया मकान वाले और विद्वान सुखी होते. अब अगर सुःख इन चीज़ों में नहीं, तो फिर किन चीज़ों में है. नीचे की मिसालों को लेकर यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि सुःख कहाँ है?

एक बच्चा पचासों कंकड़ों से खेल रहा है और वह उन कंकड़ों को बड़ी हिफाज़त से रखता है. जब सोता है तो उनमें से कुछ तो अपनी जेब में रख लेता है और सोते वक्त उन पर अपना हाथ रख लेता है. लेकिन तब लोग बच्चे की इस हरकत को देखकर हँसते हैं. चार आदमी बैठ कर ताश खेल रहे हैं, बड़ा आनंद आ रहा है, न खाने की फ़िक्र है, न पानी की. उनको नहीं मालूम कि चारों तरफ क्या हो रहा है, और कितना वक़्त निकल गया. यदि उनके खेल में कोई बाधक होता है तो वह कहते हैं कि - भाई इस समय मत छेड़ो, बड़ा मज़ा आ रहा है. तभी तार आया कि घर में फलाँ सम्बन्धी बीमार है. अब उनमें से हर आदमी चाहता है कि ताश बंद करदे. वही चीज़ें जो सुःख का साधन थीं, दुःख का जरिया बन गयीं एक आदमी भूँखा है, रात को बासी-कूसी खाना लाकर उसके सामने रख दिया जाता है और उसमें उसे बड़ा आनंद आता है. लेकिन भूख मिट जाने पर उसी खाने को देखकर उसका जी मिचलाता है.

इससे यह सिद्ध होता है कि सुःख किसी और जगह है. सोचने पर पता चलता है कि जो चीज़ हमें मन से प्यारी होती है, उसके मिलने पर हमें सुःख मिलता है, यानी आनंद हमें उस चीज़ में मालूम होता है जिसमें हमारी तवज़्ज़ो (attention) की धार ज्यादा पड़ती है, यानी जितनी वह चीज़ हमें ज़्यादा प्यारी होती है, उतना ही ज़्यादा आनंद हमें उस के प्राप्त होने से होता है. इसका मतलब यह हुआ कि तब्बज़ो की धार एकत्र हो जाती है तो हमको बड़ा सुःख मिलता है जैसे यदि कोई व्यक्ति खाने का बड़ा शौकीन है तो उस चीज़ को, जो उसे सबसे अच्छी लगती है खा कर उसे बड़ा आनंद आता है. अगर कोई प्रेमीजन है तो उसको अपने प्रियतम को देखकर बड़ी ख़ुशी प्राप्त होती है.

अब सोचो कि जब धारों में इतना आनंद है तो उस केंद्र में जहां से धारें निकलती हैं, कितना आनंद होगा? उस आनंद का वारापार नहीं है और जिसने खुशकिस्मती से उसकी झलक भी देख ली वह हर क़ुरबानी उसके लिए कर सकता है. हज़ारों दुनियाँ की बादशाहत उसके लिए हेय है. उसको देखकर, उसका अनुभव करके, किसी और चीज़ को देखने व अनुभव करने की इच्छा बाक़ी नहीं रहती. केवल उस आदमी की शुद्ध-बुद्धि ही इसका अनुभव कर सकती है जिस पर ईश्वर की कृपा हो और गुरु मेहरवान हो.

ऊपर के बयान को पढ़कर प्रेमी के दिल में यह जानने की इच्छा होती है कि क्या यह बयान सच है या दरअसल रचना में कोई ऐसा सतत आनंद का स्थान मौजूद है. यदि रचना में ऐसा कोई स्थान है तो कहाँ है और वहां तक पहुंचने का साधन क्या है? इन तीनों सबालों का जबाब संक्षेप में वर्णन करने की कोशिश की जा रही है.

पहला सबाल यह पैदा होता है कि क्या यह बयान सही है और रचना में दरअसल ऐसा कोई मंडल मौजूद है? यदि है तो कहाँ है, और हमको दिखाई क्यों नहीं देता? इसका उत्तर यह है कि यह तमाम सृष्टि और हमारा शरीर और साइंस के तमाम औज़ार हमको स्थूल रचना का ज्ञान दे सकते हैं, सूक्ष्म रचना का नहीं. सूक्ष्म रचना का ज्ञान हासिल करने के लिए हमको अपनी स्थूल इन्द्रियां शून्य करनी होंगी.

सूक्ष्म इन्द्रियां इस समय भी हमारे अन्दर मौजूद हैं, लेकिन उनकी तरफ़ बेपरवाही बरतने, और उनसे काम न लेने की वजह से वे बेकार हो गयीं है. उनको अभ्यास की मदद से जाग्रत किया जाता है. इसके लिए बड़े वक्त और अभ्यास व सत्संग की ज़रूरत है. लेकिन सच्चा ज्ञान हमको उसी वक्त हासिल होगा जब हम अपनी सूक्ष्म इन्द्रियों को जगाकर उस रचना को अपनी आँखों से देख सकेंगे.

फ़िलहाल हम अपनी उन ऋषि-मुनियों, संत-साधुओं या पूर्वजों की वाणी को देखें जो हर कौम में वक़्त-वक़्त पर पैदा होते रहे हैं. यह हस्तियाँ या तो पैदायशी ऊंचे यानी सूक्ष्म घाटों से उतरकर जीवों के फ़ायदे के लिए मनुष्य चोला धारण करते हैं या तप और अभ्यास करके उस गति को हासिल करते हैं. ऐसा करने से ज़रूर कुछ न कुछ विश्वास आ सकता है कि वास्तव में कोई ऐसा मंडल मौजूद है जहां पर पहुंच कर आदमी हमेशा के लिए दुखों से छुटकारा पा जाता है और हमेशा असली आनंद को भोग सकता है.

कृष्ण भगवान कहते हैं- " न वहाँ सूरज प्रकाश करता है न चंद्रमा, और न आग, लेकिन फिर भी वहाँ प्रकाश है. जहाँ पहुँचने पर इंसान दुनियाँ में लौट कर नहीं आता, वह मेरा परमधाम है." उपनिषदों में लिखा है

वह स्थान जिसका उपदेश सारे वेद करते हैं,जिसकी शिक्षा सब तपस्वी देते हैं और जिसकी इच्छा रखकर लोग ब्रह्मचर्य रखते हैं वह पद यानी स्थान हम बताते हैं- वह ॐ पद है.

हाफ़िज़ साहब फ़रमाते हैं कि- " यह मालूम नहीं कि मंज़िले मक़सूद किस जगह पर वाकय(स्थित)है, लेकिन इस क़दर मुझको मालूम है कि उस जानिब (और) से घंटे की आवाज़ आती है. कबीर साहब फ़रमाते हैं - "जो कोई इस भेद से वाक़िफ़ है वही जानता है कि हमारा देश कैसा है, हमारे देश में जाति, वर्ण, संध्या, नियम और आचार का कोई झगड़ा नहीं है, बिना बादलों के वहाँ बिजली चमकती है और बिना सूरज के वहाँ उजियाला है, वगैरह -वगैरह." गुरु नानक साहब फ़रमाते हैं - "सच-खण्ड की खोज करो और इंसानी जन्म सफल बनाओ."

इन सब संतों की वाणी से, जिनका जन्म ही मनुष्य की भलाई के लिए हुआ है और जो तमाम उम्र इंसानी जन्म की भलाई के कामों में लगे रहे, विश्वास आ सकता है कि ज़रूर इस नज़र आने वाली सृष्टि के परे कोई ऐसी सूक्ष्म रचना है जिसके भिन्न-भिन्न मंडलों से अलग अलग समय और स्थानों पर महान आत्माएं आयीं या भिन्न-भिन्न महात्माओं ने अभ्यास करके उन मंडलों तक पहुंच हासिल की, जिसका वर्णन उन्होंने अपनी वाणी में किया है.

उसी राज़ (तत्व) की और तालीम उन्होंने अपने शिष्यों को दी कि स्थूल दुनियाँ के आश्चर्यजनक मायाजाल में न फँसो, ज़रूरत के मुआफ़िक इस दुनिया से काम रखो और अपने निज घर की सुधि लो. और इसके साथ-साथ ये संत उस निज घर पहुँचने की युक्ति की तालीम भी देते रहे हैं. इन्हीं संतों को अवतार, पैगम्बर, औलिया, खुदा का बेटा, वगैरह-वगैरह नामों से पुकारते हैं. इन बातों को देखकर यक़ीन ज़रूर आता है कि अवश्य इस स्थूल रचना से परे कोई और सूक्ष्म रचना मौज़ूद है.

इसका विश्वास हो जाने पर दूसरा सबाल पैदा होता है कि यह देश कहाँ है? इसका उत्तर यह है कि - " पिण्डे सो ब्रह्माण्डे ". इंसान का इंसानी रूप सच्चे कुल मालिक का अंश है और वही गुण छोटे पैमाने पर इस आत्मा में मौज़ूद है जो बहुत बड़े पैमाने पर मालिके-कुल यानी परमात्मा में है. मालिक का पूर्ण रूप से अनुभव नहीं कर सकता. इसलिए इंसानी जिस्म को ध्यानपूर्वक जांचने से ही तमाम रचना का अनुमान हो सकता है. जैसे मालिक ने अपनी शक्ति से कुल रचना रची वैसे ही आत्मा ने अपनी शक्ति से यह शरीर रचा. इंसान के

जिस्म का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि यह तीन जिस्मों से मिलकर बना है. स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर (यानी मन का शरीर) और तीसरा कारण शरीर (यानी रूहानी शरीर.

इसी प्रकार से परमात्मा के भी तीन शरीर हैं. विराट, हरिण्यगर्भ और अव्यक्त. इंसान के स्थूल शरीर में छह चक्र हैं और चूंकि इंसान का स्थूल शरीर मन के जिस्म के नमूने पर बना है लिहाज़ा सूक्ष्म शरीर में भी छह चक्र हैं और सूक्ष्म शरीर कारण शरीर के नमूने पर बना है लिहाज़ा कारण शरीर के भी छह चक्र हैं. इस तरह इंसानी शरीर में १८ चक्र हैं - छह स्थूल, छह सूक्ष्म और छह कारण. इंसानी शरीर में छठे चक्र पर बैठकर (जिसको आज्ञाचक्र भी कहते हैं) आत्मा तमाम जिस्म को जान देती है. इसी तरह निर्मल चैतन्य देश में, यानी रूहानी देश के छठे स्थान में रूह के भण्डार (यानी सच्चे कुलमालिक) की बैठक है और बाकी देशों में इसकी इसकी चेतन धारें या किरणें फैली हुई हैं. जैसे इंसानी चोले में आज्ञा चक्र पर रूह की बैठक है, बाकी जिस्म पर उसकी चेतन धार या किरणें फैली हुई हैं और जैसे इस जिस्म में आत्मा का स्थान ही असली ज्ञान का, ज़िंदगी और आनंद का स्थान है, इसी तरह सत्यलोक असली बैठक उस परमात्मा की है जो तमाम ज्ञान और आनंद का भण्डार है.

इससे मालूम हुआ कि सच्चा सुख हासिल करने के लिए हर जिज्ञासु को ज़रूरी है कि वह अपनी आत्मा को इस पृथ्वी से हटाकर अपने जिस्म से परे, अपने मन से भी परे, हटा कर यानी जिस्म और मन के बारहों परदों से हटा कर (छह जिस्म के और छह मन के) निर्मल देश के छठे चक्र पर जो कि असली भण्डार रूहानियत का है, पहुँचावे, तभी सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है. इसकी महिमा हर ज़माने में संतों ने गायी है. जो मज़हब आत्मा को इस स्थान पर पहुंचा सके वही सच्चा मज़हब है और जो अभ्यासी उस सत भण्डार पर पहुंच चुका है या वहाँ से उतर आया है वही संत सतगुरु है और जो गुरुआत्मा का रुख़ उस असली सत के भण्डार की ओर फेर दे,और वहाँ तक पंहुचा दे, वही सच्चा गुरु है.

दूसरे सबाल का भी उत्तर मिल गया है कि वह चक्र अठारहवाँ स्थान है. वही असली ज़िन्दगी का और आनंद का अनंत भण्डार है.

उस देश तक कैसे पहुँचें?

अब तीसरा सवाल यह रह जाता है कि वहाँ तक पहुँचा कैसे जाये? तो इसका जबाब पहले आ चुका है. सिर्फ सच्चा गुरु ही वहाँ तक पहुँचा सकता है. और कोई जरिया नहीं है. इसलिए सच्चे गुरु की तलाश करनी

चाहिए. इसमें शक नहीं है कि सच्चे गुरु का मिलना बहुत मुश्किल है, लेकिन यह दुनियाँ आलमे इम्कान है (इसमें कोई बात असम्भव नहीं है). जिसको सच्ची लगन लगी है, जो खोज रहा है, और सच्चा मुतलाशी (खोजी) है उसको ज़रूर एक दिन सच्चे गुरु मिल जायेंगे.

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ ,

हौं बौरी खोजन चली, रही   किनारे बैठ.

जिनको सौभाग्य और परमात्मा की कृपा से ऐसे गुरु मिल गए हैं उनको चाहिए कि लग-लिपट कर अपना काम बना लें, वरना इस दुनियाँ का क्या भरोसा? यह मुमकिन है कि प्रेमी भक्त और प्रभावशाली व्यक्ति मिल जावें, लेकिन ऐसे महापुरुष जिनका आचरण उच्च कोटि का हो मिलना कठिनं ही नहीं दूभर है. कोई-कोई अवसर का लाभ उठाकर औरों के चक्क्रों में फंसकर उस अवसर से हाथ खो बैठते हैं और फिर उम्र भर पछताते रहते हैं. फिर न मालूम ऐसा मौका उनको कब हाथ आये?

राम सन्देश : जनवरी-फरवरी २०११.